7-7 Scanned

पुत्रप्रदमभिलाषाष्टकं स्तोत्रम्

(षष्ठीदेवी स्तोत्र सहितम)

सम्पादक

वेदाचार्य श्री वेणीराम शर्मा गौड़

प्रकाशक :

मास्टर खेलाड़ीलाल

संस्कृत बुक डिपो

कचौड़ीगली—वाराणसी

संवत् : २०५३

मूल्य १० रुपया

अथ

पुत्रप्रदमभिलाषाष्टकं स्तोत्रम्

(षष्ठीदेवीस्तोत्रसहितम)

सम्पादक

वेदाचार्यः श्री वेणीराम शर्मा गौड़

※

प्रकाशक :

मास्टर खेलाड़ीलाल

संस्कृत बुक डिपो

कचौड़ीगली, वाराणसी

मूल्य : दस रुपया

प्राप्ति स्थान :
मास्टर खेलाड़ी लाल एण्ड सन्स
प्रोपराइटर : गोपाल जी
संस्कृत बुक डिपो
कचौड़ी गली, वाराणसी—१

तृतीय संस्करण
संवत् २०५३ बसंत पंचमी

दो शब्द

स्कन्दपुराणोक्त काशीखण्ड में 'अभिलाषाष्टक स्तोत्र' है, जिसका श्रद्धा-भक्ति से प्रतिदिन प्राचीन शिवमन्दिर में पाठ करने से अवश्य ही पुत्र की प्राप्ति होती है।

'अभिलाषाष्टक स्तोत्र' के सम्बन्ध में इस प्रकार लिखा है—

महर्षि विश्वानर की धर्मपत्नी शुचिष्मती ने अपने पति से प्रार्थना किया 'मेरे शिव के सदृश पुत्र हो।' पत्नी द्वारा गई प्रार्थना को सुनकर महर्षि बोले—'एवमस्तु' (ऐसा ही होगा)। पश्चात् महर्षि विश्वानर ने स्वयं १२ महीने तक फ़लाहार, जलाहार और वाय्वाहार करते हुए उग्र तपस्या की। अनन्तर वे वाराणसी गये और वहाँ जाकर उन्होंने विकरा देवी तथा सिद्धिविनायक के पास चन्द्रकूप में स्नान करके वहीं पर वीरेश्वर महादेव के समीप बैठकर स्कन्दपुराणोक्त (काशीखण्ड, पूर्वार्द्ध, अध्याय १०) 'अभिलाषाष्टक स्तोत्र' का श्रद्धा-भक्तिपूर्वक पाठकर उनकी स्तुति की। महर्षि विश्वानर के द्वारा 'अभि-लाषाष्टक स्तोत्र' के श्लोकों को सुनकर भगवन् वीरेश्वर महादेव सन्तुष्ट हो गये और उनकी कृपा से कुछ ही समय के बाद महर्षि विश्वानर की धर्मपत्नी गर्भवती हो गई और यथासमय उसने शिव के सदृश पुत्र गृहपति (अग्नि) को जन्म दिया। अतः पुत्राभिलाषी को चाहिये कि वह प्रातः स्नानादि नित्य-कर्म से निवृत्त होकर श्रद्धा-भक्ति से शिवजी का पूजन करे और स्कन्दपुराणा-न्तर्गत काशीखण्ड के 'अभिलाषाष्टक स्तोत्र' का प्रतिदिन २८ बार अथवा ८ बार पाठ किया करे। इस प्रकार निरन्तर एक वर्ष तक पाठ करने से अवश्य ही दीर्घायु पुत्र की प्राप्ति होती है।

पुत्र न होने के अनेक कारण

महर्षि शतातप ने कहा कि ब्राह्मण के रत्न चुराने से पुत्र नहीं होता है। दूसरे आचार्यों ने कहा है कि—जो मनुष्य सुवर्ण की चोरी करता है, उसका विक्रय करता है, गुरुपत्नी से गमन करता है और वापी, कूप, तालाब, मन्दिर आदि धार्मिक कार्यों में विघ्न करता है, उसके पुत्र नहीं होता है।

पुत्र-प्राप्ति के लिए धार्मिक अनुष्ठानों की आवश्यकता

जिस मनुष्य के पुत्र न हो, उन्हें धार्मिक अनुष्ठानों को अवश्य करना चाहिए। धार्मिक अनुष्ठानों के करने से पूर्वजन्मकृत सभी पापों की निवृत्ति हो जाती है। अतः हमने पुत्रार्थी के लिये अनेक प्रकार के धार्मिक अनुष्ठानों को और अनेक प्रकार की औषधियों को लिखा है।

'अभिलाषाष्टक स्तोत्र' के साथ-साथ निम्नलिखित विषय भी दिये गये हैं—

१—पुत्र देनेवाले अनेक व्रत।
२—पुत्रप्राप्ति के लिए अनेक उपाय।
३—पुत्रप्राप्ति के लिये पापघट का दान।
४—मरे हुए बालक न होने का उपाय।
५—पुत्र न होने का कारण और उसकी निवृत्ति का उपाय।
६ - पुत्रप्राप्ति के लिये विविध यज्ञ।
७—पुत्रप्राप्ति के लिये अनेक दवाएँ।
८—मृतवत्सा-दोषनाशक अनेक दवाएँ।
९—गर्भरक्षार्थ अनेक दवाएँ।
१०—केवल कन्या ही पैदा होती हो, उसकी दवाएँ।
११—स्त्री के कोख-बन्धन को छुड़ाने की दवा।
१२—स्त्री का कोख-बन्धन है या नहीं, इसके ज्ञानार्थ दवा।
१३—सुख से प्रसव होने के उपाय।

१४–पुत्रप्रदमभिलाषाष्टकं स्तोत्रम् ।

१५–षष्ठीदेवीस्तोत्रम् ।

इस संसार में सभी मनुष्य धन और पुत्र की कामना करते हैं । धन के बिना मनुष्य का इहलौकिक जीवन दुःखद होता है और पुत्र के बिना मनुष्य का इहलौकिक और पारलौकिक दोनों प्रकार का जीवन दुःखद होता है । अतः धनप्राप्ति के लिये 'श्रीसूक्त' का पाठ और हवन कहा गया है तथा पुत्रप्राप्ति के लिये 'अभिलाषाष्टक स्तोत्र' का पाठ कहा गया है ।

यज्ञ, मन्दिर की प्रतिष्ठा और श्रीमद्भागवत सप्ताह कथा के निमित्त प्रतिवर्ष भारत के प्रमुख-प्रमुख स्थानों में जाना पड़ता है, तत्र तत्तत् स्थानों में अनेक नर और नारी पुत्र-प्राप्ति के लिये उपाय पूछा करते हैं । अतः मैंने पुत्र-कामना वालों के लिये 'अभिलाषाष्टक स्तोत्र' पुस्तक का संग्रह किया है, जिसमें पुत्र-प्राप्ति के लिये अन्य अनेक उपाय लिखे हैं । जिनका उल्लेख पीछे किया जा चुका है । मुझे विश्वास है कि 'अभिलाषाष्टक स्तोत्र' के पाठसे और इस स्तोत्र के साथ जो अन्य उपाय लिखे गये हैं, उनको करने से अवश्य ही दीर्घजीवी पुत्र की प्राप्ति होगी ।

मास्टर खेलाड़ीलाल ऐण्ड सन्स, संस्कृत बुकडिपो, वाराणसी के अध्यक्ष श्रीयुत् गोपालजी विशेष धन्यवाद के पात्र हैं, जिन्होंने 'अभिलाषाष्टक स्तोत्र' का प्रकाशन कर पुत्राभिलाषियों का विशेष कल्याण किया है ।

वेणीराम गौड वेदाचार्य

पुत्र देनेवाले अनेक व्रत

१ –पयोव्रत—श्रीमद्भागवत में 'पयोव्रत' का विशेष विधान लिखा है। यह फाल्गुन शुक्ल प्रतिप्रदा से प्रारम्भ करके फाल्गुन शुक्ल द्वादशी पर्यन्त १२ दिन तक किया जाता है। इस व्रत के निमित उत्तम मुहूर्त देखकर फाल्गुन की अमावास्या को जंगल में जाकर—

'त्वं देव्यादिवराहेण रसायाः स्थानमिच्छता।
उद्धृतासि नमस्तुभ्यं पाप्मानं मे प्रणाशय॥'

—इस मंत्र से जङ्गली शूकर की खोदी हुई मिट्टी को अपने समस्त शरीर में लगावे और किसी नदी या तालाब में जाकर स्नान करें। पश्चात् गौ के दूध की खीर बनाकर दो वेदज्ञ ब्राह्मणों को भोजन करावे और स्वयं भी उसी पदार्थ का भोजन करे। दूसरे दिन अर्थात् फाल्गुन शुल्क प्रतिपदा को विष्णु भगवान का गौ के दुग्ध से स्नान कराकर अपने हाथ से जल लेकर "मम दीर्घायुष्य-सम्पन्नपुत्रप्राप्तिकामनया विष्णुदेवताप्रीतये पयोव्रतमहं करिष्ये" इस प्रकार सङ्कल्प करे। पश्चात् सुवर्ण के निर्मित हृषीकेश (विष्णु) भगवान् का 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' के इस महामन्त्र से आह्वान, स्थापनादि षोडशोपचारपूर्वक पूजन करके १ ॐ महापुरुषाय नमः। २ ॐ सूक्ष्माय नमः। ३ ॐ द्विशीर्ष्णे नमः। ४ ॐ शिवाय नमः। ५ ॐ हिरण्यगर्भाय नमः। ६ ॐ आदिवेदाय नमः। ७ ॐ मरकतश्यामवपुषे नमः। ८ ॐ त्रयीवघात्मने नमः। ९ ॐ योगैश्वर्यशरीराय नमः—से श्रद्धा-भक्तिपूर्वक भगवान् को प्रणाम और पुष्पाञ्जलि समर्पण करके स्वयं एक वार यथेच्छ दुग्ध पीवे। इस प्रकार प्रतिपदा से लेकर द्वादशीपर्यन्त १२ दिन तक व्रत करे और त्रयोदशी को भगवान् विष्णु का सविधि पूजन और पञ्चामृत से स्नान करावे तथा १३ ब्राह्मणों को गोदुग्ध की खीर का भोजन करावे। पश्चात् पूजित मूर्ति भूमि के, सूर्य के, जल अथवा अग्नि के अर्पण करके गुरु (आचार्य) को देवे और व्रत-विसर्जन करके तेरहवें दिन स्वयं अल्पमात्रा में खीर का भोजन करें।

यह पयोव्रत विशेष कर पुत्र की प्राप्ति की इच्छा रखने वाले सन्तानहीन स्त्री और पुरुष दोनों को करना चाहिये। इसी व्रत के प्रभाव से देवमाता अदिति के उदर से वामन भगवान् का प्राकट्य हुआ था।

२—**गोपूजन**—जिस स्त्री को पुत्र न होता हो, वह कार्तिक मार्गशीर्ष अथवा वैशाख शुक्ल पक्ष में पहले गुरुवार को गो-पूजन प्रारम्भ करे। प्रतिदिन प्रातःकाल स्नानादि नित्यकर्म से निवृत्त होकर अपनी अथवा दूसरे की गौ को मकान के प्राङ्गण में पूर्वाभिमुख खड़ी करे और स्वयं उत्तराभिमुख होकर पवित्र जल से गौ का पादप्रक्षालन करे। पश्चात् गौ के मस्तक को धोकर उसके बीच में रोली का टीका लगावे और चावल चढ़ावे। अनन्तर गौ को मिष्ठान्न (लड्डू) आदि पदार्थों को खिलावे। फिर श्रद्धायुक्त होकर हाथ जोड़कर प्रार्थना करे— 'हे गौ माता ! तुम मुझे दीर्घजीवी पुत्र देकर इच्छा पूर्ण करो।' इस प्रकार लगातार एक वर्ष तक गो-पूजन करने से श्रद्धाशील नारी अवश्य दीर्घायु पुत्र प्राप्त करती है।

३—**कृष्णव्रत**—जिस पुरुष के प्रौढावस्था में भी पुत्र न हुआ हो, वह यदि द्विज हो, तो नूतन यज्ञोपवीत धारण करके शुभ मुहूर्त में भगवान् श्रीकृष्ण के अथवा गणेशजी के मन्दिर में अथवा गोशाला में अथवा पीपल, गूलर, कदम्ब के वृक्ष के नीचे बैठकर दीपक जला ले और कमल, कदम्ब अथवा तुलसी की माला पर—

देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि में तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥

—इस महामन्त्र का प्रतिदिन पाँच हजार अथवा अढ़ाई हजार अथवा एक हजार जप करे। इस प्रकार सवा लाख जप के पूर्ण होने पर उसका दशांश हवन, तर्पण, मार्जन करके फिर ब्राह्मणों को खीर, मालपूआ, पूरी आदि भोजन कराकर दक्षिणा दे। ऐसा करने से भगवान् श्रीकृष्ण की कृपा से अवश्य ही दीर्घायु पुत्र की प्राप्ति होती है।

४—**गायत्रीपुरश्चरण**—जिस पुरुष को पुत्र की इच्छा हो, वह शुभ मुहूर्त

में गायत्री पुरश्चरण प्रारम्भ करे। पुरश्चरण प्रारम्भ करने के एक दिनपूर्व सर्व-प्रायश्चित और उपवास करे दूसरे दिन किसी देवस्थान अथवा विल्ववृक्ष के नीचे भगवान् सूर्य के स्वरूप का ध्यान करता हुआ रुद्राक्ष की माला से प्रति-दिन पाँच हजार अथवा तीन हजार अथवा गायत्री का जप करे। साथ ही प्रतिदिन शुद्ध गोघृत से दशांश-हवन भी करता रहे। जप के अनन्तर प्रतिदिन जौ की रोटी और मूंग की दाल बनाकर भोजन करें। जो अन्न खाया जाय, वह अपना ही होना चाहिये। इस व्रत में ब्रह्मचर्यव्रत का पालन परमावश्यक है।

गायत्री मन्त्र का चौबीस लाख जप पूर्ण होने पर गायत्री देवी की कृपा से जपकर्ता को निश्चित ही पुत्र की प्राप्ति होती है।

*पुत्र-प्राप्ति के अनेक उपाय

१—तीर्थयात्रा और रेवा तथा ताप्ती नदी में अथवा किसी भी दो नदी के सङ्गम में पति और पत्नी दोनों का ही *एकवस्त्र स्नान (एक-एक वस्त्र पहनकर) करना चाहिये।

२—महर्षि पराशर का कहना है कि पुत्र-सुख की इच्छावाली स्त्री को महान् तीर्थ में, महायोग में और महान नदियों के सङ्गम में पलाश के पत्र से स्नान करना चाहिये।

३—आचार्य देवराम का कथन है कि पुत्र की कामनावाली स्त्री को एकादशी के दिन गायत्री मन्त्र के द्वारा पलाश के एक हजार पत्रों के पवित्री से युक्त होकर स्नान करना चाहिये।

४—हरिवंश पुराण की कथा का सविधि श्रवणकर पश्चात् शतचण्डी कराना चाहिये।

---

* (१) पुत्रप्राप्ति के अनेक उपाय कौस्तुभ, महार्णव और गरुडपुराण आदि ग्रन्थों से तथा गौतम, मुद्गल, पराशर एवं दैवराम आदि महर्षियों के वचनो से। उद्घृत किये गये हैं।

(२) पुत्र की प्राप्ति के लिये यथाशक्ति सभी उपायों को रचना चाहिये।

* एक वस्त्र स्नान की विधि 'अनुष्ठानप्रकाश' में लिखी है।

५—अनाथ ब्राह्मण का धर्मार्थ विवाह कराना चाहिये।

६—एक सौ आठ (१०८) ब्राह्मणों को खीर आदि मिष्ठान्न-भोजन कराना चाहिये।

७—'ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदा शिवोऽम्'

—इस मन्त्र का एक हजार अथवा दश हजार अथवा एक लाख जप और उसका दशांश हवनादि विधिपूर्वक करना चाहिये।

८—एक लाख कमल के पुष्पों से शिवपञ्चाक्षर से शिवजी का पूजन करना चाहिये।

९—सुवर्ण की गौ अथवा सवत्सा सुरभि गौ का दान करना चाहिये।

१०—घृत से परिपूर्ण ताम्र के कलश का दान करना चाहिये।

११—दोला में रखकर सुवर्ण का बालक बनाकर उसका यथाविधि दान करना चाहिये।

१२—ग्यारह गौओं का और ग्यारह बैलों का दान करना चाहिये।

१३—महारुद्र का जप और उसका दशांश हवन दूर्वा और घृत से युक्तकर करना चाहिये।

१४—सविधि शतचण्डी और रुद्राभिषेक कराना चाहिए।

१५—वाल्मीकि रामायण के 'बालकाण्ड' का पाठ करना चाहिये। जो संस्कृत न जानते हों, उन्हें तुलसीकृत रामायण के बालकाण्ड का पाठ करना चाहिये।

१६—सन्तानगोपाल का पाठ और—

"देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥"

—इस मन्त्र का कम से कम १००८ बार जप करना चाहिये।

१७—श्रीमद्भागवत का सप्ताह-श्रवण करना चाहिये।

१८—अभिषेकात्मक अथवा हवनात्मक रुद्र, लघुरुद्र, महारुद्र और अतिरुद्र करना चाहिये।

१९–सपत्नीक गयाश्राद्ध करना चाहिये ।
२०–विष्णुयाग करना[1] चाहिये ।
२१–सूर्य की आराधना करनी चाहिये ।

पुत्र-प्राप्ति के लिये पापघट का दान

महापाप करने से जिसको पुत्र नहीं हुआ हो, वह सपत्नीक किसी पवित्र तीर्थ में जाकर शुभ दिन में सविधि 'पापघट' का दान करे ।

जिस दिन पापघट का दान करना हो, उसके एक दिन पहले पति और पत्नी दोनों एकाहारी रहें और ब्रह्मचर्य-व्रत का पालन करें। दूसरे दिन स्नानादि से निवृत्त होकर पति और पत्नी पवित्र स्थान में पूर्वाभिमुख होकर बैठ जायें और स्वस्तिवाचन एवं गणपतिपूजन, कलशस्थापन, पुण्याहवाचनादिपूर्वक आचार्यादि ब्राह्मणों का वरण करें। पश्चात् 'सर्वतोभद्र' का निर्माण कर उस पर यथाशक्ति सुवर्ण, चाँदी अथवा ताम्र का ६४ पल का कलश-स्थापन करें और उस कलशस्थित पूर्णपात्र में सुवर्ण की विष्णु भगवान् की मूर्ति और फणवाली नाग की मूर्ति को स्थापित करे। अनन्तर भगवान् विष्णु की षोडशोपचार से तथा नाग की पञ्चोपचार से पूजा करें। पश्चात् प्राङ्गण के मध्य भाग में स्थण्डिल बनावें और पञ्चभूसंस्कारपूर्वक अग्निस्थापन करें। अनन्तर कुशकण्डिका करके विष्णु-मन्त्र से शुद्ध गो-घृत १००८ अथवा १०८ बार हवन करें और पापघटके प्रदानार्थ बुलाये हुए ब्राह्मण (पापघट जिसको दान किया जाय, फिर पापघट दान करने वाला उसका मुख न देखे) का पूजन कर उसे भोजन करावे ।

पश्चात्—

मनसा दुर्विनीतेन यन्मया पातकं कृतम् ।
तत्तिष्ठतु घटे चास्मिन् गुरुदेवप्रसादतः ॥ १ ॥
व्रजता तिष्ठता वापि कर्मणा यदुपार्जितम् ।

---

१. पुत्र-प्राप्ति के लिये विष्णुयाग करने की विधि और विष्णुयाग प्रयोग 'अनुष्ठानप्रकाश' में लिखा है ।

तत्तिष्ठतु घटे चास्मिन् गुरुदेवप्रसादतः ॥ २ ॥
परस्वहरणेनापि पातकं यदुपार्जितम् ।
तत्तिष्ठतु घटे चास्मिन् गुरुदेवप्रसादतः ॥ ३ ॥
सुवर्णस्तेयजं पापं मनोवाक्कायकर्मजम् ।
तत्तिष्ठतु घटे चास्मिन् गुरुदेवप्रसादतः ॥ ४ ॥
रसविक्रयतः पापं ब्रह्मजन्मनि सञ्चितम् ।
तत्तिष्ठतु घटे चास्मिन् गुरुदेवप्रसादतः ॥ ५ ॥
क्षात्रधर्मविहीनेन क्षात्रजन्मनि यत्कृतम् ।
तत्तिष्ठतु घटे चास्मिन् गुरुदेवप्रसादतः ॥ ६ ॥
वैश्यजन्मन्यपि मया तथा यत्पातकं कृतम् ।
तत्तिष्ठतु घटे चास्मिन् गुरुदेवप्रसादतः ॥ ७ ॥
शूद्रजन्मनि यत्पापं सततं समुपार्जितम् ।
तत्तिष्ठतु घटे चास्मिन् गुरुदेवप्रसादतः ॥ ८ ॥
गुरुदाराभिगमनात् पातकं यन्मयार्जितम् ।
तत्तिष्ठतु घटे चास्मिन् गुरुदेवप्रसादतः ॥ ९ ॥
अपेयपानसंभूतं पातकं यन्मयार्जितम् ।
तत्तिष्ठतु घटे चास्मिन् गुरुदेवप्रसादतः ॥१० ॥
वापीकूपतडागानां भेदनेन कृतं च यत् ।
तत्तिष्ठतु घटे चास्मिन् गुरुदेवप्रसादतः ॥ ११ ॥
अभक्ष्यभक्षणेनैव सञ्चितं यत्तु पातकम् ।
तत्तिष्ठतु घटे चास्मिन् गुरुदेवप्रसादत ॥ १२ ॥
ज्ञाताज्ञातैरनेकैश्च घटोऽय सम्भृतो मया ।
पूर्वजन्मान्तरोत्पन्नैरेतज्जन्मकृतैरपि ॥ १३ ॥

उपर्युक्त मन्त्रों से क्रमशः एक-एक मन्त्र द्वारा चावल अथवा दूर्वा कलश पर चढ़ाता जाय । मन्त्र समाप्त होने पर अपने दाहिने हाथ में पवित्र जल, चन्दन, चावल, पुष्प, सुपारी आदि लेकर देश-कालादि का स्मरण कर 'सपत्नीकोऽहं मम इह जन्मनि जन्मान्तरे च ज्ञाताज्ञातसमस्तपापादिपूरितमिमं घटं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे' इसप्रकार संकल्प पढ़कर

पापघट दान के निमित्त निमन्त्रित ब्राह्मण के हाथ में सङ्कल्प छोड़ दे और कुछ सुवर्ण भी कलश में छोड़कर उस कलश को स्वयं दोनों हाथों से उठा कर ब्राह्मण को दे दे और करबद्ध प्रार्थना करे—

महीसुर द्विजश्रेष्ठ जगतस्तापहारक।
त्राहि मां दुःखसन्तप्तं त्रिभिस्तापैः सदार्दितम्॥
संसारकूपतस्त्वं मां समुद्धर नमोऽस्तु ते।
त्वदन्यो नास्ति मां देव समुद्धर्तुं क्षमः क्षितौ॥

पश्चात् विसर्जन करे और आचार्यादि ब्राह्मणों को दक्षिणा देकर भोजन करावे। अनन्तर पति और पत्नी स्वयं भोजन करें।

मरे हुए बालक न होनेके उपाय

'महार्णव' नामक ग्रन्थ में लिखा है—

१—बालक की हत्या करनेवाले पुरुष के मरे हुए बालक होते हैं। अतः इस दोष की निवृत्ति के लिये अनाथ ब्राह्मण का विवाह करे। हरिवंश की कथा सुने। विधिपूर्वक महारुद्र का जप और उसका दशांश हवन दूर्वा और घृत से (दोनों को मिलाकर) करे। ग्यारह निष्क सुवर्ण की दक्षिणा दे। ग्यारह पशुओं (गौ तथा बैल आदि) का दान करे और अन्य ब्राह्मणों को भी अपनी शक्ति के अनुसार दक्षिणा दे। पश्चात् वरुण देवता के मन्त्रों से पति और पत्नी दोनों स्नान करें और आचार्य को वस्त्र, आभूषण और अलङ्कार आदि देवें।

२—पद्मपुराण में लिखा है—सन्तानगोपाल का जप, महारुद्र का जप, पार्थिव का पूजन और गणेशजी का जप करने से मरे हुए पुत्र उत्पन्न नही होते।

पुत्र न होने का कारण और उसकी निवृत्ति का उपाय

महर्षि शातातप ने कहा है—ब्राह्मण के रत्न चुराने से पुत्र नहीं होता, अतः इस दोष की निवृत्ति के लिये महारुद्र का जपादि करना चाहिये।

पुत्र-प्राप्तिके लिये विविध यज्ञ

१—आश्वलायन श्रौतसूत्र, वाल्मीकीय रामायण (बालकाण्ड १५।२) और विद्यार्णव तन्त्रमें 'पुत्रेष्टि यज्ञ'[1] का विधान लिखा है, जिसको सविधि करने से पुत्र की प्राप्ति होती है। अथर्ववेद में भी पुत्रोत्पादनार्थ कुछ मन्त्र मिलते हैं, जिन मन्त्रों के द्वारा सविधि हवन (यज्ञ) करने से निश्चित ही पुत्र की प्राप्ति होती है।

२—महाराज दशरथ के पुत्र नहीं थे, उन्होंने पुत्र की कामना से 'पुत्रेष्टि यज्ञ' किया था, जिससे उन्हें भगवान् राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न-ये चार पुत्र हुए।

३—पद्मपुराण (उत्तर खण्ड) में लिखा है कि पुत्रेष्टि-यज्ञ में अग्नि-कुण्ड से भगवान विष्णु प्रकट हुए। भगवान् विष्णु से महाराजा दशरथ ने याचना की—'भगवन्! आप मेरे पुत्रभाव को प्राप्त हों।' दशरथ द्वारा किये गये पुत्रेष्टियज्ञ के फलस्वरूप भगवान विष्णु अपने अंशों के सहित भगवान् राम के रूप में, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न के साथ दशरथ के यहाँ प्रकट हुए।

४—श्रीमद्भागवत (९।२०।३५) में पुत्रकी प्राप्ति के लिये 'मरुत्स्तोम' नामक यज्ञ कहा गया है। दुष्यन्त के पुत्र चक्रवर्ती राजा भरत ने पुत्र-प्राप्त्यर्थ 'मरुत्स्तोम' यज्ञ किया था, जिससे मरुद्गणों ने प्रसन्न होकर भरत को 'भरद्वाज' नामक पुत्र दिया।

५—श्रीमद्भागवत (९।१।१३) में 'मित्रावरुण' नामक यज्ञ का विधान है, जिसको करने से पुत्र की प्राप्ति होती है।

६—श्रीमद्भागवत (९।२) में लिखा है कि मनु ने पुत्र की प्राप्ति के लिये भगवान् वासुदेव का यज्ञ किया था, जिससे उन्हें १० पुत्र हुए।

७—वैवस्वत मनु सन्तानहीन थे। उन्होंने सन्तान की प्राप्तिके लिये महर्षि वसिष्ठ के द्वारा 'मित्रावरुण यज्ञ' कराया, जिससे उन्हें सन्तान की प्राप्ति हुई।

---

१. पुत्रेष्टियज्ञ (सन्तानयाग) के मन्त्रों की जानकारी के लिये मेरी 'यज्ञ मीमांसा' (तृतीय संस्करण) देखनी चाहिये।

८—त्रिशंकु के पुत्र राजा सत्य हरिश्चन्द्र सन्तानहीन थे। वे नारद मुनि की आज्ञानुसार 'वरुणदेव' की शरण में गये और उनसे सन्तान की प्राप्ति के लिये प्रार्थना की। वरुणदेव की कृपा से उन्हें 'रोहित' नामक सन्तान की प्राप्ति हुई।

९—विष्णुयज्ञ कराने से सन्तान की प्राप्ति होती है।

पुत्र-प्राप्ति के लिये अनेक दवाएँ

(१) सर्वप्रथम स्त्री के प्रदर अथवा मासिक धर्म की खराबी दूर करके पीपल की दाढ़ी ऽ। भर और लाल शक्कर ऽ।—इन दोनों को बारीक कूट-छान कर चूर्ण बना ले। यह चूर्ण १ तोला गर्म गोदुग्ध के साथ प्रातःकाल और सायंकाल जिस दिन स्त्री को मासिक धर्म हो, उसी दिन से वह खावे। इसी प्रकार पति भी खावे। चूर्ण खाने के ग्यारहवें दिन से पति अपनी स्त्री से समागम करे, तो अवश्य ही स्त्री को गर्भ रहेगा।

(२) नेपाली कस्तूरी १०॥ मासा, केसर १०॥ मासा, जायफल १०॥ मासा, दक्षिणी सुपारी १०॥ मासा, पुराना गुड़ (कम से कम पाँच वर्ष का) १३ मासा, लौंग नग ४, सत्यानाशी (सफेद कटैली) की जड़ १। तोला—इन सबको खरल में डालकर २४ घण्टे खरल करे और उसमें जल उतना डाले, जितने में गोली बन जाय। गोली बेर के बराबर बनानी चाहिये। प्रातःकाल और सायङ्काल गौ के पाव भर दुग्ध में मिश्री डालकर उसके साथ एक-एक गोली ७ दिन तक खाने से बाँझ स्त्री के भी पुत्र हो जाता है।

(३) सफेद कटेरी २॥ तोला, शिवलिङ्गी के बीज १ तोला, पुराना गुड़ ५ मासा, सोंठ सफेद ५ मासा, अफीम २ मासा, केसर २ मासा, जायफल २ मासा, नेपाली कस्तूरी २ रत्ती, लौंग नग ४, गुजराती इलायची नग ४, दक्षिणी सुपारी नग ३, इन सब चीजों को एक साथ कूटकर और कपड़-छान कर गुड़ में मिलाकर झड़बेरिया (झाड़ी के बेर) के सदृश गोली बनावे। जब स्त्री मासिक धर्म से शुद्ध हो जाय, तब वह उसी दिन से लगातार ७ दिन तक प्रातः और सायङ्काल एक-एक गोली खावे और ऊपर से मिश्री मिले हुए गोदुग्ध को पीवे, तो अवश्य ही स्त्री के गर्भ रहता है।

(४) गजपिप्पल और पिस्ते का छिलका बराबर-बराबर दो पैसा भर लगातार १ महीने तक गोदुग्ध के साथ प्रातः और सायङ्काल दोनों समय खाने से स्त्री गर्भवती होती है।.

(५) सुपारी का फूल ४ मासा, असगन्ध ४ मासा, अजवाइन ४ मासा, वायविडंग ४ मासा और साठी के चावल $\frac{1}{4}$ पाव, इन सब को चक्की में पीसकर बारीक करके पानी मिलाकर चने के बराबर अथवा छोटी हरड़ जैसी गोली बना ले। यह गोली पति के समागम के बाद कम से कम ३१ दिन तक स्त्री खाय तो वह गर्भवती होती है।

(६) सोंठ, छुहाड़े के छिलके, वंशलोचन, असगन्ध और नागौरी, इन सब को अन्दाज से लेकर कूट-छानकर चूर्ण बना लेवे। पति के समागम के बाद इस चूर्ण को गोदुग्ध के साथ ३१ दिन सेवन करने से स्त्री गर्भवती होती है।

(७) छुहाड़ा १५ और धनिया की जड़ १ पैसा भर-इन दोनों को कूट-छानकर चूर्ण बना ले और उस चूर्ण को पति के समागम के बाद बछड़े वाली गौ के दुग्ध के साथ दो तीन महीने लगातार खाने से बांझ स्त्री भी गर्भवती हो जाती है -

(८) रविवार के दिन 'सर्पाक्षी' की जड़, डाली और पत्तों के सहित उखाड़ लाये। फिर एक वर्णवाली गौ के दुग्ध के साथ उसे अविवाहित कुमारी कन्या के द्वारा पिसवाकर एक की वर्णवाली गो के दुग्ध के साथ मिलाकर रजोदर्शन से शुद्ध होकर चौथे दिन से छठे दिन तक (तीन दिन तक) पीना चाहिये।

दवा की मात्रा एक तोला होगी। प्रतिदिन मिश्री मिलाकर गोदुग्ध और भातका भोजन करे। अधिक परिश्रम न करे। दवा पीने से पूर्व नीचे लिखे दोनों मन्त्रों की एक-एक माला जप करे। माला १०८ दाने की होनी चाहिये।

१—ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

२—देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥

नीचे लिखे हुए (७२) यन्त्र का भी प्रयोग करना चाहिये ।

यन्त्र—[७२]

०८	०१	३४	२९
३०	३३	०४	०५
०२	०७	२८	३५
३२	३१	६०	०३

उपर्युक्त यन्त्र को भोजपत्र पर अष्टगन्ध[1] से लिखकर पत्नी को अपनी बायी भुजा, कमर अथवा कण्ठ मे ताबीज में डालकर धूप देकर शुभ मुहूर्त में धारण करना चाहिये ।

९—पलाश के एक पत्र को किसी गर्भवती स्त्री के दुग्ध से भिगोकर ऋतु स्नान के वाद ७ दिन तक खाने से बन्ध्या स्त्री के भी पुत्र होता है ।

पथ्य—दवा सेवन करने के ७ दिन तक स्त्री को गोदुग्ध, शालिधान्य का भात और मूंग की दाल खानी चाहिये ।

(१०) कदम्ब क पत्र और श्वेतबृहती (भटकटैया) का मूल बराबर-बराबर भाग लेकर बकरी के दूध अथवा गोक्षुर (गोखरू) के बीज अथवा सम्हालू के रस में पीस कर ५ दिन अथवा ३ दिन खाने से निश्चय ही पुत्र होता है ।

(११) एक रुद्राक्ष और दो तोला सर्पाक्षी इन दोनों को एक वर्णवाली गौ के दुग्ध में पीसकर बन्ध्या नारी को खिलाने से वह पुत्रवती होती है ।

(१२) बूटी दूधी बड़ी २ तोला, पीपलकी दाढ़ी १ तोला, कस्तूरी असली ४ रत्ती, केशर असली १ मामा, कुश्ता फौलाद १ मासा, वंशलोचन १ तोला,

१. सफेद चन्दन, रक्त चन्दन, केसर, कस्तूरी, कपूर, अगर, तगर और कुमकुम—इन्हें 'अष्टगन्ध' कहते हैं ।

छोटी इलायची के दाने १ मासा, चांदी के वर्क असली बड़े १५० नग—इन सबको खरल में कूटकर मैदे की तरह महीन कर लें, जिसमें कपड़-छान की जरूरत न हो।

[१] यह दवा स्त्री को ऋतुमती होने पर ३ महीने तक देनी चाहिए। प्रायः पहले महीने में अथवा दूसरे महीने में अथवा तीसरे महीने में स्त्री के अवश्य ही गर्भ रह जाता है। यदि तीन महीने तक दवा का सेवन करने पर भी जिस स्त्री को गर्भ न रहे, उसको कभी भी बालक नहीं होगा।

[२] पहले मास में १७ दिन, दूसरे मास में १५ दिन और तीसरे मास में ५ दिन दवा खानी चाहिए।

सेवनविधि—

१—प्रातःकाल ६ रत्ती खुराक दवा खानी चाहिए।

२—दवा खाने के समय आकाश में कुछ तारे होने चाहिए।

३—बछड़ेवाली गौ के दुग्ध के साथ दवा खानी चाहिए।

४—पीने वाले दुग्ध को जमीन पर नहीं रखना चाहिए।

५—गोदुग्ध में कोरी खाँड़ मिलानी चाहिए।

६—काष्ठ के पीढ़े पर बैठकर दवा खानी चाहिए और दुग्ध पीना चाहिए।

७—दवा और दुग्ध जमीन पर बैठ कर नहीं लेना चाहिए।

८—दवा और दुग्ध का सेवन १७ दिन तक करना चाहिए।

९—दवा खाने के समय १७ दिन तक खट्टा पदार्थ और गुड़ की मिठाई नहीं खानी चाहिए।

१०—दवा खाने के समय १७ दिन तक ब्रह्मचर्य से रहना चाहिए।

(१३) गोदुग्ध और द्राक्षा (अंगूर) के अङ्कुर को लेकर पीस डाले। पश्चात् उसको गोदुग्ध के साथ पान करे। ऐसा करने से स्त्री का दैवकृत दोष नष्ट हो जाता हैं और उसको पुत्र होता है।

(१४) वटवृक्ष का अग्र भाग और नीम के बीज को पीसकर उसको

गौ के धारोष्ण दुग्ध के साथ पी जाय। ऐसा करने से स्त्री का दैवकृत दोष निवृत्त हो जाता है और वह पुत्र को उत्पन्न करती है।

मृतवत्सा-दोषनाशक दवाएँ

१—शिवलिङ्गी के बीज ५ तोला, पीपल ५ तोला, नागकेशर ५ तोला इन सबको जल में पीसकर चने के बराबर गोली बनावें। पश्चात् प्रातः और सायंकाल एक-एक गोली जल के साथ ४० दिन तक खाने से बालक दीर्घजीवी हो जाते हैं, मरते नहीं है।

२—ककोड़े के वृक्ष के मूल को कदली के रस में पीसकर ऋतुकाल में ७ दिन तक सेवन करने से दीर्घजीवी पुत्र होता है।

३—शुभ नक्षत्र में अपामार्ग के मूल और लक्ष्मणा के मूल को उखाड़कर फिर उसको एक वर्ण की गौ के दुग्ध में पीसकर पीने से स्त्री को दीर्घजीवी पुत्र होता है।

गर्भरक्षार्थ अनेक दवाएँ

१—जिस स्त्री को गर्भ बार-बार गिर जाता है, उसको फिटकरी और बाँस की छाल इन दोनों को अन्दाज से कूटकर गर्म जल में खुब औटाकर निरन्तर ७ दिन तक एक बार १ छटाँक पीना चाहिये। ऐसा करने से गर्भवती स्त्री का गर्भ नष्ट नहीं होगा।

२—गर्भवती स्त्री को शिवलिङ्गी के बीज का एक दाना प्रतिदिन खाना चाहिये। जिस दिन रजोधर्म प्रारम्भ हो, उसी दिन से दो सप्ताह तक शिवलिङ्गी के बीज का एक दाना खाना चाहिए। शिवलिङ्गी के बीज का एक दाना जल के साथ निगल जाना चाहिए। (ब्रह्मचर्य का पालन आवश्यक है)।

३—पीपल के फल को इकट्ठा कर, उनको छाया में सूखा लें, पश्चात् उन्हें कूट लें। अनन्तर रजोधर्म के बाद पीपल के फल के चूर्ण को ६ मासे

से एक तोले तक (इच्छानुसार) मिश्री के साथ दो सप्ताह तक खाना चाहिये ।[1]

केवल कन्या ही पैदा होती हो, उसकी अनेक दवाएँ

(१) गर्भ रहने के दो महीने तक मोरपंख के चाँद को गुड़ के अन्दर रख कर एक गोली बना ले । पश्चात् रवि, सोम और मंगल-इन दोनों वारों में से किसी भी एक वार को प्रातःकाल सूर्योदय के समय गोली को मुख में रखकर ऊपर से बछड़ेवाली गौ के दुग्ध को पीकर उसे निगल जाय, जिससे गोली पेट में चली जाय । गर्भवती स्त्री को चाहिये कि वह मकान के कमरे की देहली में खड़ी होकर अपना बायाँ पैर आगे करके और दाहिना पैर पीछे कर भगवान् सूर्यको देखती हुई दुग्ध के साथ गोली निगले । ऐसा करने से स्त्री को कन्या न होकर पुत्र ही पैदा होगा ।

सोमवार को उपर्युक्त दवा की जाय, तो विशेष लाभप्रद होगा ।

(२) गर्भवती स्त्री गर्भ ठहरने के पहले अथवा दूसरे महीने तक शिवलिंगी के बीजों के चूर्ण को ३ मासे मिश्री मिले हुए गोदुग्ध के साथ २१ दिन तक अथवा १४ दिन तक सेवन करें, तो कन्या न होकर पुत्र ही पैदा होगा ।

(३) स्त्री गर्भ ठहरने तीसरे मास तक मोरपंख की चाँद को गुड़ के बीच में रखकर गोली बना लें । फिर उसको प्रातःकाल ७ दिन तक लगातार बछड़ेवाली गौ के दुग्ध के साथ सेवन करे, तो कन्या न होकर पुत्र होगा ।[2]

---

१. स्त्री के मासिक धर्म को ठीक करने की दवा, प्रदर की दवा, और और अनेक प्रकार की स्त्री-सम्बन्धी रोगों की दवाओं की जानकारी के लिये हमारी 'नारीधर्मशिक्षा' पुस्तक देखनी चाहिये ।

२. पुत्र होने के लिये किसी भी दवा को खाने के बाद यदि किसी गर्भवती स्त्री का जी घबड़ाये अथवा वमन होने को हो, तो वह छोटी इलायची खा ले और वमन न होने दे । दवा खाने बाद स्त्री विशेष कार्य न करे, पलंग पर आराम करे । जिस दिन दवा खाये, उस दिन खिचड़ी आदि हल्का भोजन और दुग्धपान करे ।

पति को भी सोमवार के दिन अथवा अन्य पुत्रवाले दिन रविवार, मंगलवार और वृहस्पतिवार को अपनी स्त्री से समागम करनी चाहिये। इन वारों में स्त्री के गर्भ रहने से पुत्र ही होता है।

स्त्री के लिए ऋतुकाल की चौथी, छठीं, आठवीं, दसवीं और वारहवीं रात्रि पुत्रोत्पत्ति के लिये कही गयी है।

(४) मासिक धर्म के बाद सोमवार को मोरपंख की चाँद को गुड़ के बीच में पंख रखकर प्रातःकाल बछड़ेवाली गौ के दुग्ध के साथ गर्भवती स्त्री गले के अन्दर निगल जाय। इस प्रकार लगातार ४, ५ सोमवार को बछड़ेवाली गोदुग्ध के साथ गोली खाने से कन्या न होकर पुत्र होता है।

स्त्री के कोख-बंधन को छुड़ाने की दवा

सिंघाड़ा टंक ७ (७ तोला), मैदा टंक १० (१० तोला), आँवला टंक ५ (५ तोला), जायफल टंक ५ (५ तोला), सहत टंक ५ (५ तोला, और जावित्री टंक २॥ (२॥ तोला)—इन सबको कूट-पीसकर कपड़ छानकर ले पश्चात् गूलर की छाल टंक १॥ (१॥ तोला,) वड़ वेर की छाल टंक १॥ (१॥ तोला) और कुंदरू की गुद्दा टंक १॥ (१॥ तोला) इन सबको पीसकर मिला देना चाहिए और उनकी गोली नग १५ बना लेना चाहिये।

प्रतिदिन प्रातःकाल १ गोली खानी चाहिये। प्रातः और सायंकाल दोनों समय चावल, खाँड़ (देशी चीनी) और शुद्ध घृत के साथ भोजन करना चाहिये।

मासिक धर्म के बाद ही गोली (दवा) खानी चाहिए। इससे स्त्री की कोख का बन्धन छूट जाता है।

स्त्री के कोख-बंधन है या नहीं, उनके ज्ञानार्थ दवा

पेठा का बीज ७ नग, मेथी टंक आधा (आधा तोला) और मिश्री

नोट—भिण्डी के पेड़ को उखाड़ने में यदि उसकी जड़ कुछ टूट जाय, तो 'कन्या' होगी। यदि जड़ न टूटे, तो 'पुत्र' होगा।

टंक ५ (५ तोला)—इन सबको पीसकर जल टंक १० (१० तोला) में डाल देवें। पश्चात् रविवार को स्त्री खाली पेट पीवे। यदि दवा हजम हो जाय, तो कोख बँधी हुई है, यह समझना चाहिए। यदि दवा वमन हो जाय, तो कोख नहीं बँधी है, यह समझना चाहिए।

सुख से प्रसव होने के उपाय

१—भिण्डी के पेड़ को जड़ के सहित उपार लें, पश्चात् उस जड़ का छिलका पीसकर मिश्री और काली मिर्च मिला करके गर्भवती स्त्री को पिला देने से शीघ्र प्रसव सुखपूर्वक होगा।

२—जिस इमली के पेड़ से फूल न आये हों, ऐसे इमली के छोटे वृक्ष की जड़ गर्भवती स्त्री के सिर के सामने के बालों में बाँध देना चाहिए। ऐसा करने से विना कष्ट के ही प्रसव हो जाता है। परन्तु सन्तान-प्रसव हो जाने के साथ ही तत्काल उन बालों के सहित उसको (इमली के वृक्ष की जड़ को) भी कैंची से काट देना चाहिए।

३—ॐ मुक्ता पाशा विपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः।
मुक्तसर्वभयाद् गर्भं त्राह्येहि मारीच स्वाहा॥

उपर्युक्त मन्त्र के द्वारा पवित्र जल को आठ बार अभिमन्त्रण करके गर्भिणी स्त्री को जल पिलाने से उसको सुख से प्रसव होगा।

४—गर्भवती स्त्री के प्रसव होने में देर हो अथवा वह प्रसव-वेदना से छटपटाती हो, तो वट के पत्ते पर नीचे लिखा मन्त्र तथा बत्तीसा यन्त्र लिखकर उसके मन्त्र पर रखने से शीघ्र ही प्रसव सुखपूर्वक हो जाता है।

मंत्र

अस्ति गोदावरी तीरे जम्भला नाम राक्षसी। तस्याः स्मरणमात्रेण विशल्या गर्भिणी भवेत्।

बत्तीसा यन्त्रः

१	८	९	१४
११	१२	३	६
७	२	१५	८
१३	१०	५	४

५—हिमवन्युत्तरे पार्श्वे शवरी नाम यक्षिणी ।
तस्या नूपुरशब्देन विशल्यां स्यात्तु गर्भिणी ॥

—इस मन्त्र से २१ दूर्वांकुर से एक पल तिल के तैल को प्रदक्षिण क्रम से आवर्तन करते हुए १०८ वार मन्त्र बोलकर उस तेल को गर्भवती स्त्री को पिला दे और बचे हुए तेल को उस स्त्री के पेट में लेपन कर दे तो शीघ्र प्रसव होता है ।

□

अथ पुत्रप्रदमभिलाषाष्टकं स्तोत्रम् ।

एकं ब्रह्मैवाद्वितीयं समस्तं सत्यं नेह नानास्ति किञ्चित् ।
एको रुद्रो न द्वितीयोऽवतस्थे तस्मादेकं त्वां प्रपद्ये महेशम् ॥१॥

विश्वानर ने कहा—सत्य सत्य एक अद्वितीय ब्रह्म ही सब है । संसार में अनेक कुछ भी नहीं है ॥ १ ॥

एकः कर्ता त्वं हि विश्वस्य शम्भो नानारूपेष्वेकरूपोऽस्य रूपः ।
यद्वत्तपत्यर्क एकोऽप्यनेकस्तस्मान्नान्यं त्वां विनेशं प्रपद्ये ॥१॥

(वेद का कथन है कि) एक रुद्र ही हैं, दूसरे नहीं, अतः आप ही एक अद्वितीय विश्वेश्वर ब्रह्म है, जैसे सूर्य एक होने पर भी जल में प्रतिबिम्बित होकर अनेक प्रतीत होते हैं उसी प्रकार निराकार आप एकरूप होकर भी विविध पदार्थों में विविध रूप से प्रतिभासित होते हैं । अतः हे ईश ! आपके अतिरिक्त मैं किसी अन्य का भजन नहीं करता ॥ २ ॥

रज्जौ सर्पः शुक्तिकायां च रौप्यं नैरे पूरस्तन्मृगाख्ये मरीचौ ।
यद्वत्तद्वद् विश्वगेष प्रपञ्चो यस्मिन् ज्ञाते तं प्रपद्ये महेशम् ॥३॥

जिस प्रकार रस्सी, सीप और मृगमरीचिका का ज्ञान हो जाने पर रस्सी से सर्प का भ्रम, सीप से चाँदी का भ्रम और मृगमरीचिका से जल समूह का भ्रम दूर हो जाता है, उसी प्रकार जिसके जान लेने से यह ब्रह्मांड-व्यापी विश्व के प्रपंच का भ्रम मिट जाता है, उन्हीं महेश की शरण में मैं प्राप्त होता हूँ ॥३॥

तोये शैत्यं दाहकत्वं च वह्नौ तापो भानौ शीतभानौ प्रसादः ।
पुष्पे गन्धो दुग्धमध्ये च सर्पिर्यत्तच्छम्भो त्वं ततस्त्वां प्रपद्ये ॥४॥

आप जल में शीतलता, अग्नि में दाहिका (जलाने वाली) शक्ति, सूर्य में ताप, चन्द्रमा में प्रसन्नता, फूल में गन्ध, दूध में घी है, अतः मैं आपका भजन करता हूँ ॥ ४ ॥

शब्दं गृह्णास्यश्रवास्त्वं हि जिघ्रस्य घ्राणस्त्वं व्यंघ्रिरायासि दूरात् ।
ठ्यक्षः पश्येस्त्वं रसज्ञोऽप्यजिह्वः कस्त्वां सम्यग् वेत्त्यतस्त्वां प्रपद्ये ॥

आप कर्महीन है, फिर भी शब्दों को सुनते हैं, आप को नासिका नहीं है, फिर भी सूंघ लेते हैं, आप चरण से रहित हैं, फिर भी दूर से आगमन करते हैं, आपको नेत्र नहीं है, फिर भी सब कुछ देखते हैं, आपको जिह्वा नहीं है फिर भी समस्त रसों के ज्ञाता हैं, अतः आपको सम्यक् रूप से कौन जान सकता है, मैं आपकी शरण में आया हूँ ॥ ५ ॥

नो वेदस्त्वामीश साक्षाद्धि वेद नो वा विष्णुर्नो विधाताखिलस्य ।
नो योगीन्द्रा नेन्द्रमुख्याश्च देवा भक्तो वेद त्वामतस्त्वां प्रपद्ये ॥

हे ईश ! वेद भी आपको यथार्थ रूप से नहीं जानते, न विष्णु, न अखिल लोक के विधाता ब्रह्मा, न योगिराज और न इन्द्र प्रमुख देवता लोग ही आपको जानते हैं, अतः मैं आपकी शरण में हूँ ॥ ६ ॥

नो ते गोत्रं नेश जन्म जन्मापि नाख्यानो वा रूपं नैव शीलं न देशः ।
इत्थं भूतोऽपीश्वरस्त्वं त्रिलोक्याः सर्वान् कामान् पूरयेस्तद् भजेत्वाम्

हे ईश ! यद्यपि आपका गोत्र नहीं, जन्म नहीं, नाम नहीं, रूप नहीं, शील नहीं और न देश ही है तथापि आप त्रिलोकी के नाथ और सब लोगों की समस्त कामनाओं के पूर्ण करने वाले हैं, अतः मैं आपका शरणागत हूँ ॥ ७ ॥

त्वत्तः सर्वं त्वं हि सर्वं स्मरारे त्वं गौरीशस्त्वं च नग्नोऽतिशान्तः ।
त्वं वैवृद्धस्त्वं युवा त्वं च बालस्तत्किं यत्त्वं नास्यतस्त्वां नतोऽस्मि

हे कामदेव के विध्वंसक ! आपही से समस्त लोक उत्पन्न हुआ है, आप ही सब हैं, आप गौरीनाथ हैं, आप दिगम्बर हैं, आप नितान्त शान्त हैं, आप ही वृद्ध, युवक और बालक हैं, अधिक क्या कहें जो आप नहीं हैं ऐसा और क्या है ? अतः मैं आपको प्रणाम करता हूँ ॥ ८ ॥

स्तुत्वेति भूमौ निपपात विप्रः स दण्डवद्यावदतीव हृष्टः ।
तावत्स बालोऽखिलवृद्धवृद्धः प्रोवाच भूदेव वरं वृणीहि ॥९॥

ज्योंही उस विंप्र विश्वानर ने अत्यन्त हर्षित हो, इस प्रकार स्तुति कर, भूतल पर गिरकर दण्डवत् प्रणाम किया, त्यों ही सकल वृद्धों के वृद्ध उस बालक ने कहा—हे ब्राह्मण ! वर माँगो ॥ ९ ॥

तत उत्थाय हृष्टात्मा मुनिर्विश्वानरः कृती।
प्रत्यब्रवीत् किमज्ञातं सर्वज्ञस्य तव प्रभो ॥१०॥

तब कुशल मुनि विश्वानर ने प्रसन्नचित्त हो, भूतल से उठकर, उत्तर दिया—हे प्रभु ! आप सर्वज्ञ हैं आप से भला क्या छिपा है ? ॥ १० ॥

सर्वान्तरात्मा भगवान् शर्वः सर्वप्रदो भवान्।
याञ्चा प्रतिनियुङ्क्ते मामयशो दैन्यकारिणी ॥११॥

भगवन् ! आप सर्व अन्तर्यामी, सर्वरूप, समस्त अभिलाषाओं के दाता हैं, आप सर्वेश्वर हैं, आप मुझे दीनताकारिणी याचना के प्रति क्यों विवश कर रहे हैं ?

इति श्रुत्वा वचस्तस्य देवो विश्वानरस्य ह।
शुचे शुचिव्रतस्याथ शुचिः स्मित्वाब्रवीच्छिवः ॥१२॥

पवित्र, पुण्यात्मा, व्रती उस विश्वानर की (दीनताभरी) यह वाणी सुनकर उन बालरूप देवाधिदेव ने मुस्कराकर यह बात कही ॥ १२ ॥

त्वया शुचे शुचिष्मत्यां योऽभिलाषः कृतो हृदि।
अचिरेणैव कालेन स भविष्यत्यसंशयः ॥१३॥

बालक ने कहा—हे पवित्रात्मा ! आपने शुचिष्मती के प्रति हृदय में जो अभिलाषा की है वह थोड़े ही दिनों में निस्सन्देह पूरी होगी ॥ १३ ॥

तव पुत्रत्वमेष्यामि शुचिष्मत्यां महामते।
ख्यातो गृहपतिर्नाम्ना शुचिः सर्वामरप्रियः ॥१४॥

हे महामतिशाली ! मैं शुचिष्मती के गर्भ से आपके पुत्ररूप में उत्पन्न होऊँगा। मेरा नाम 'गृहपति' होगा और मैं पवित्र तथा समस्त देवताओं का प्रिय होऊँगा ॥ १४ ॥

अभिलाषाष्टकं पुण्यं स्तोत्रमेतत्त्वयेरितम्।
अब्दं त्रिकालपठनात्कामदं शिवसन्निधौ ॥१५॥

आपने जो इस 'अभिलाषाष्टक' को कहा हैं उसे जो व्यक्ति शिवजी के समीप त्रिकाल एक वर्षपर्यन्त पाठ करेंगे। उनकी समस्त कामनाएँ पूरी होंगी ॥ १५ ॥

एतत्स्तोत्रस्य पाठं तु पुत्रपौत्रधनप्रदम्।
सर्वशान्तिकरं वापि सर्वापत्त्यरिनाशनम् ॥१६॥

इस (अभिलाषाष्टक) के पाठ करने से पुत्र, पौत्र और धन की प्राप्ति होगी। यह सकल शान्ति का कर्ता एवं समस्त आपत्तियों का निवारण करने वाला है ॥ १६ ॥

स्वर्गापवर्गसम्पत्तिकारकं नात्र संशयः।
प्रातरुत्थाय सुस्नातो लिङ्गमभ्यर्च्य शाम्भवम् ॥१७॥

यह स्वर्ग, मोक्ष और सम्पत्तियों को देनेवाला है, इसमें सन्देह नहीं। जो पुत्रहीन व्यक्ति प्रातःकाल उठकर, भली-भाँति स्नान करके वीरेश्वर शिवलिङ्ग की पूजा करके ॥ १७ ॥

वर्षं जपन्निदं स्तोत्रमपुत्रः पुत्रवान् भवेत्।
वैशाखे कार्तिके माघे विशेषनियमैर्युता ॥१८॥

जो एक वर्ष तक इस (अभिलषाष्टक) का पाठ करेंगे उन्हें पुत्र के मुख को देखने का सौभाग्य प्राप्त होगा। वैशाख, कार्तिक और माघ मास में विशेष नियमों से युक्त होकर ॥ १८ ॥

यः पठेत्स्नानसमये लभते सकलं फलम्।
कार्तिकस्य तु मासय प्रसादादहमव्ययः ॥ १९ ॥

जो मनुष्य स्नान करते समय इस स्तोत्र का पाठ करेंगे उन्हें सम्पूर्ण फल प्राप्त होगा। मैं अव्यय होकर भी इसी कार्तिक मास के प्रसाद से ॥१९॥

तव पुत्रत्वमेष्यामि यस्त्वन्यस्तत्पठिष्यति।
अभिलाषाष्टकमिदं न देयं यस्य कस्यचित् ॥ २० ॥

आपके पुत्र रूप में उत्पन्न होऊँगा। आपके अतिरिक्त दूसरे जो कोई इसका पाठ करेंगे उन्हें भी पुत्र की प्राप्ति होगी। इस अभिलाषाष्टक को जैसे-तैसे व्यक्ति को नहीं देना चाहिए ॥ २० ॥

गोपनीयं प्रयत्नेन एवं वन्ध्याप्रसूतिकृत्।
स्त्रिया वा पुरुषेणापि नियमोल्लिङ्गसन्निधौ ॥ २१ ॥

यत्नपूर्वक इसे गुप्त ही रखना चाहिए। इसके पाठ करने से वन्ध्या नारियों को भी पुत्र होता है। चाहे स्त्री हो अथवा पुरुष हो जो भी नियम-पूर्वक वीरेश्वर शिवलिङ्ग के समीप ॥ २१ ॥

अब्दं जप्तमिदं स्तोत्रं पुत्रदं मात्र संशयः।
इत्युक्त्वान्तदधे बालः सोऽपि विप्रो गृहं गतः ॥ २२ ॥

एक वर्ष इसका पाठ करेंगे उन्हें पुत्र की प्राप्ति होगी। इसमें सन्देह नहीं। ऐसा कहकर वह बालक उसी लिङ्ग में अन्तर्धान हो गये और वे विश्वानर ब्राह्मण भी अपने घर को चले गये ॥ २२ ॥

श्रीषष्ठीदेवीकथा

[ध्यान-पूजाविधि-स्तोत्रसहिता]

नारद उवाच—

षष्ठी मङ्गलचण्डी च मनसा प्रकृतेः कला।
उत्पत्तिमासां चरितं श्रोतुमिच्छामि तत्त्वतः ॥ १ ॥

नारद जी ने कहा—हे ब्रह्मन् ! षष्ठी देवी, मङ्गलचण्डी और मनसादेवी मूलप्रकृति की अंशावतार हैं। अतः मैं इनकी उत्पत्ति और चरित्र के सम्बन्ध में पूर्णतया जानना चाहता हूँ ॥ १ ॥

नारायण उवाच—

षष्ठांशा प्रकृतेर्या च सा षष्ठी प्रकीर्तिता।
बालकानामधिष्ठात्री विष्णुमाया च बालदा ॥ २ ॥

नारायण ने कहा—हे नारद ! मूलप्रकृति का छठा अंश ही 'षष्ठी देवी' हैं। वह बालकों को अधिष्ठात्री देवी हैं, भगवान् विष्णु की माया हैं और सबको बालक देने वाली हैं ॥ २ ॥

मातृकासु च विख्याता देवसेनाभिधा च या।
प्राणाधिकप्रिया साध्वी स्कन्दभार्या न सुव्रता ॥ ३ ॥

वह षोडश मातृकाओं में 'देवसेना' के नाम से विख्यात हैं। वह स्कन्द-कुमार की प्राणों से भी अधिक प्रियतमा, सुन्दर व्रतवाली, पतिव्रता पत्नी हैं ॥ ३ ॥

आयुःप्रदा च बालानां धात्री रक्षणकारिणी।
सततं शिशुपार्श्वस्था योगेन सिद्धियोगिनी ॥ ४ ॥

वह बालकों को आयु प्रदान करती हैं और बालकों को धात्री के रूप में सदा उनकी रक्षा करती हैं। वह सिद्धयोगिनी अपने योगबल से बालकों के बगल में सदा खड़ी रहती हैं ॥ ४ ॥

तस्याः पूजनविधिं ब्रह्मन्नितिहासमिदं शृणु।
यच्छ्रुतं धर्मवक्त्रेण सुखदं पुत्रदं परम् ॥५॥

हे ब्रह्मन् ! उन षष्ठीदेवी की पूजाविधि और इतिहास सुनिए। इससे परम सुख मिलता है और सन्तान की प्राप्ति होती है। इस इतिहास को मैंने धर्म के मुख से सुना था ॥ ५ ॥

कथा—

राजा प्रियव्रतश्चासीत् स्वायम्भुवमनोः सुतः।
योगीन्द्रो नोद्वहद्भार्यां तपस्यासु रतः सदा ॥६॥

स्वायम्भुव मनु के पुत्र राजा प्रियव्रत हुए। वह योगिराज होकर सदा तपस्या किया करते थे, इसलिए उन्होंने विवाह नहीं किया ॥ ६ ॥

ब्रह्माज्ञया च यत्नेन कृतदारो बभूव ह।
सुचिरं कृतदारश्च न लेभे तनयं मुने ! ॥७॥

तब ब्रह्माजी ने बड़ा प्रयत्न किया, जिससे उनके आदेश को मानकर उन्होंने विवाह करना स्वीकार कर लिया। लेकिन हे नारद जी ! विवाह के बाद बहुत वर्ष बीत जाने पर भी उन्हें कोई पुत्र नहीं हुआ ॥ ७ ॥

पुत्रेष्टियज्ञं तं चापि कारयामास कश्यपः।
मालिन्यै तस्य कान्तायै मुनिर्यज्ञचरुं ददौ ॥८॥

तब महर्षि कश्यपजी ने उनसे पुत्रेष्टि यज्ञ कराया। यज्ञ-समाप्ति के अवसर पर कश्यपजी ने उनकी रानी मालिनी को यज्ञीय चरु दे दिया ॥८॥

भुक्त्वा च तं चरुं तस्याः सद्यो गर्भो बभूव ह।
दधार तं च सा देवी दैवं द्वादशवत्सरम् ॥९॥

उस चरु के खाने के साथ ही रानी को तत्काल गर्भ रह गया और वे देवी दैववर्ष के गणनानुसार, बारह वर्ष तक गर्भवती रह गयीं ॥ ९ ॥

ततः सुषाव सा ब्रह्मन् ! कुमारं कनकप्रभम्।
सर्वावयवसम्पन्नं मृतमुत्तारलोचनम् ॥१०॥

हे ब्रह्मन् ! उसके बाद उसने सुवर्ण की तरह कान्तिमान् एक पुत्र को जन्म दिया, जिसके सब अङ्ग-प्रत्यङ्ग बन चुके थे। लेकिन वह मरा हुआ था और आँखों की पुतलियाँ उल्टी हुई थीं ॥ १० ॥

तं दृष्टवा रुरुदुः सर्वा नार्यश्च बान्धवस्त्रियः।
मूर्च्छामवाप तन्माता पुत्रशोकेन भूयसा ॥११॥

ऐसे बालक को देखकर रनिवास की सभी नारियाँ और भाई-बन्धु की स्त्रियाँ रोने लगीं। उसकी माता भी अपने नवजात पुत्र की यह अवस्था देखकर, महान् शोक के कारण मूर्च्छित हो गयी ॥ ११ ॥

श्मशानं च ययौ राजा गृहीत्वा बालकं मुने !।
रुरोद तत्र कान्तारे पुत्रं कृत्वा स्ववक्षसि ॥१२॥

हे नारद जी ! उस बालक को लेकर स्वयं राजा प्रियव्रत श्मशान में गये और उस वन में बालक को अपनी छाती से लगा कर रोने लगे ॥१२॥

नोत्सृजद् बालकं राजा प्राणांस्त्युक्तुं समुद्यतः।
ज्ञानयोगेन विसस्मार पुत्रशोकात् सुदारुणात् ॥१३॥

यहाँ तक उनके मन में बात आयी कि वह अपना प्राणत्याग (आत्म-हत्या) करने पर कटिबद्ध हो गये, लेकिन बालक का त्याग करना उन्हें स्वीकार, नहीं हुआ। पुत्रशोक के कारण उनका ज्ञानयोग (विवेक) जाता रहा ॥ १३ ॥

एतस्मिन्नन्तरे तत्र विमानं च ददर्श सः।
शूद्धस्फटिकसङ्काशं मणिराजविनिर्मितम् ॥ १४ ॥

इसी समय उन्होंने एक विमान देखा जो शुद्ध स्फटिक मणि की तरह एकदम स्वच्छ था और अच्छी-अच्छी मणियों से बना था ॥ १४ ॥

तेजसा ज्वलितं शश्वच्छोभितं क्षौमवाससा।
नानाचित्रविचित्राढ्यं पुष्पमालाविराजितम् ॥ १५ ॥

वह विमान अपने तेज से प्रज्वलित हो रहा था, रेशमी वस्त्रों से सदा

सुशोभित था और उसमें अनेक तरह की रंग-बिरंगी फूलों की मालाएँ लटक रही थीं ॥ १५ ॥

ददर्श तत्र देवीं च कमनीयां मनोहराम्।
श्वेतचम्पकवर्णाभां शश्वत् सुस्थिरयौवनाम् ॥ १६ ॥

उस विमान में राजा ने एक कमनीय और सुन्दर देवी का दर्शन किया। उनके शरीर का रंग सफेद चम्पा के फूल की तरह सफेद था। वह निरन्तर युवती बनी रहती थीं ॥ १६ ॥

ईषद्धास्यप्रसन्नास्यां रत्नभूषणभूषिताम्।
कृपामयीं योगसिद्धां भक्तानुग्रहकातराम् ॥ १७ ॥

उनके प्रसन्न मुखमण्डल पर मन्द मुस्कराहट अठखेली करती थी। वह रत्नों के बने हुए आभूषणों से अलंकृत थीं। वह करुणामयी सिद्धयोगिनी थीं और अपने भक्तों के ऊपर अनुग्रह करने के लिए तत्पर थीं ॥ १७ ॥

दृष्ट्वा तां पुरतो राजा तुष्टाव परमादरम्।
चकार पूजनं तस्या विहाय बालकं भुवि ॥ १८ ॥

उनको अपने सामने देखकर, राजा प्रियव्रत ने बालक को जमीन पर लिटा दिया। और उनकी पूजा करके परम आदर के साथ उनकी स्तुति की ॥ १८ ॥

प्रपच्छ राजा तां तुष्टां ग्रीष्मसूर्यसमप्रभाम्।
तेजसा ज्वलितां शान्तां कान्तां स्कन्दस्य नारद ! ॥ १९ ॥

फिर हे नारद ! तेज से प्रज्वलित, शान्त, ग्रीष्म ऋतु के सूर्य के समान प्रखर प्रभा से शोभायमान, स्कन्दकुमार की भार्या से राजा ने प्रश्न किया ॥ १९ ॥

राजोवाच--

का त्वं सुशोभने ! कान्ते ! कस्य कान्तासि सुव्रते !।
कस्य कन्या वरारोहे ! धन्या मान्या च योषिताम् ॥ २० ॥

राजा ने पूछा—हे लावण्यवती ! आप कौन हैं ? हे सुन्दरी ! आप किस की पत्नी हैं ? हे पतिव्रता ! आपके पिता का क्या नाम है ? हे सुन्दर

जाँघवाली ! आपकी आकृति से स्पष्ट है कि आप नारियों में सौभाग्यवती और पूजित हैं ॥ २० ॥

नृपेन्द्रस्य वचः श्रुत्वा जगन्मङ्गलचण्डिका ।
उवाच देवसेना सा देवानां रणकारिणी ॥ २१ ॥

महाराज की बात सुनकर देवसेना बोलीं—वह जगन्मङ्गल चण्डिका थीं और देवताओं की ओर से रण करनेवाली थीं ॥ २१ ॥

देवानां दैत्य-ग्रस्तानां पुरा सेना बभूव सा ।
जयं ददौ सा तेभ्यश्च देवसेना च तेन सा ॥ २२ ॥

अत्यन्त प्राचीन काल की घटना है कि उस समय दैत्यों ने देवताओं का राज्य छीन लिया था । तब उन्होंने देवताओं की सेना का सञ्चालन सूत्र अपने हाथों में लेकर देवताओं को जय दिलवायी थी तभी से उनका नाम 'देवसेना' पड़ गया ॥ २२ ॥

देवसेनोवाच—

ब्रह्मणो मानसी कन्या देवसेनाऽहमीश्वरी ।
सृष्ट्वा मां मनसा धाता ददौ स्कन्दाय भूमिप ! ॥ २३ ॥

श्री देवसेना ने कहा—हे राजन् ! मैं ब्रह्मा की मानसी कन्या हूँ, मेरा नाम देवसेना है । मैं स्वयं ईश्वरी हूँ । मुझे ब्रह्मा ने अपने मनोविज्ञान से बनाकर, स्कन्दकुमार की पत्नी बना दिया ॥ २३ ॥

मातृकासु च विख्याता स्कन्दभार्या च सुव्रता ।
विश्वे षष्ठीति विख्याता षष्ठांशा प्रकृतेः परा ॥ २४ ॥

मैं षोडश मातृकाओं में स्कन्दकुमार की पतिव्रता भार्या के नाम से प्रसिद्ध हूँ । इस संसार में लोग मुझे 'षष्ठी' के नाम से पुकारते है, क्योंकि मैं प्रकृति की षष्ठ परम अंशरूपिणी हूँ ॥ २४ ॥

अपुत्राय पुत्रदाऽहं प्रियादात्री प्रियाय च ।
धनदाऽहं दरिद्रेभ्यः कर्मिभ्यश्च स्वकर्मदा ॥ २५ ॥

मैं अपुत्रों को पुत्र, पत्नी-रहितों को भार्या, दरिद्रों को धन और कर्म करने वालों को कर्म प्रदान करती हूँ ॥ २५ ॥

सुखं दुःखं भयं शोको हर्षो मंगलमेव च।
सम्पत्तिश्च विपत्तिश्च सर्वं भवति कर्मणा ॥ २६ ॥

सुख, दुःख, भय, शोक, हर्ष, मङ्गल, सम्पत्ति और विपत्ति—ये सब कर्म से होते हैं ॥ २६ ॥

कर्मणा बहुपुत्रश्च वंशहीनः स्वकर्मणा।
कर्मणा मृतपुत्रश्च कर्मणा चिरजीविनः ॥ २७ ॥

अपने कर्म के फल से लोगों को बहुत पुत्र होते हैं। अपने कर्म से वंशहीन होते हैं। अपने कर्म से पुत्र हो-होकर मर-मर जाते हैं और अपने कर्म से चिरंजीवी संतान होते हैं ॥ २७ ॥

कर्मणा गुणवांश्चैव कर्मणा चांगहीनकः।
कर्मणा बहुभार्यश्च भार्याहीनश्च कर्मणा ॥ २८ ॥

कर्म से लोग गुणवान् होते हैं। कर्म से वे अङ्गहीन होते हैं। कर्म से अनेक स्त्रियाँ मिलती हैं और कर्म से एक स्त्री भी नहीं मिलती ॥ २८ ॥

कर्मणा रूपवान् धर्मी रोगी शाश्वत् स्वकर्मणा।
कर्मणा च भवेद् व्याधिः कर्मणाऽऽरोग्यमेव च ॥ २९ ॥

कर्म से लोग रूपवान् होते हैं। कर्म ही से धर्मात्मा होते है। कर्म से सदा रोगी बने रहते हैं। कर्म से व्याधिग्रस्त होते हैं और कर्म से ही उन्हें आरोग्य लाभ होता है ॥ २९ ॥

तस्मात् कर्मपरं राजन् ! सर्वेभ्यश्च श्रुतौ श्रुतम्।
इत्येवमुक्त्वा सा देवी गृहीत्वा बालकं मुने ! ॥ ३० ॥

इसलिए हे महाराज ! वेद में लिखा हुआ है कि सबसे मुख्य 'कर्म' है। इतना कहकर हे नारद जी ! देवी ने बालक को उठाकर ॥ ३० ॥

महाज्ञानेन सा देवी जीवयामास लीलया।
राजा ददर्श तं बालं सस्मितं कनकप्रभम् ॥ ३१ ॥

अपने महाविज्ञान के प्रभाव से लीलापूर्वक ही उस बालक को जीवित बना दिया। राजा ने देखा कि उस बालक के शरीर से स्वर्ण की भाँति कान्ति निखर आयी है और वह मुस्करा रहा है ॥ ४१ ॥

देवसेना च पश्यन्तं नृपमापृच्छ्य सा तदा।
गृहीत्वा बालकं देवी गगनं गन्तुमुद्यता ॥ ३२ ॥

राजा के देखते-देखते, देवसेना ने उस बालक को अपनी गोद में उठा लिया और राजा से विदा माँगकर आकाश में चली जाने के लिए तैयार हो गयीं ॥ ३२ ॥

पुनस्तुष्टाव तां राजा शुष्ककण्ठोष्ठतालुकः।
नृपस्तोत्रेण सा देवी परितुष्टा बभूव ह ॥ ३३ ॥

यह देखकर राजा के कण्ठ, ओठ और तालू चटकने लगे और वह पुनः उनकी स्तुति करने लगे। तब राजा के स्तोत्र से देवी अतीव सन्तुष्ट हुई ॥ ३३ ॥

उवाच तं नृपं ब्रह्मन्! वेदोक्तं कर्मनिर्मितम्।

देव्युवाच—

त्रिषु लोकेषु त्वं राजा स्वायम्भुवमनोः सुतः ॥ ३४ ॥

और हे नारद जी! वह राजा से कहने लगीं कि कर्म का निर्माण वेदोक्त है (अर्थात् कर्म बड़ा बलवान होता है)। देवी ने कहा—आप स्वायम्भुव मनु के पुत्र हैं और तीनों लोकों के एकच्छत्र सम्राट् हैं ॥ ३४ ॥

मम पूजां च सर्वत्र कारयित्वा स्वयं कुरु।
तदा दास्यामि पुत्रं ते कुलपद्मं मनोहरम् ॥ ३५ ॥

इसलिए मेरी पूजा का सर्वत्र (अपने साम्राज्य के अन्दर) प्रचार कराइए और स्वयं आप मेरी पूजा करें। यदि आप ऐसी प्रतिज्ञा करेंगे तभी मैं आपके मनोहर और आपके वंश के लिए कमलस्वरूप पुत्र को दूंगी ॥ ३५ ॥

सुव्रतं नाम विख्यातं गुणवन्तं सुपण्डितम्।
जातिस्मरं च योगीन्द्रं नारायणकलात्मकम् ॥ ३६ ॥

आपका यह पुत्र भगवान् नारायण का कलावतार 'सुव्रत' के नाम से प्रसिद्ध होगा। यह गुणवान्, अत्यन्त विद्वान, अपने पूर्वजन्म की बातें स्मरण रखने वाला, योगियों में श्रेष्ठ ॥ ३६ ॥

शतक्रतुकरं श्रेष्ठं क्षत्रियाणां च वन्दितम्।
मत्तमातङ्गलक्षाणां धृतवन्तं बलं शुभम् ॥ ३७ ॥

सौ यज्ञ करने वाला, श्रेष्ठ, समस्त क्षत्रियों में पूजनीय, एक लाख मतवाले हाथियों के तुल्य बलशाली, शुभकारक ॥ ३७ ॥

धनिनं गुणिनं शुद्धं विदुषां प्रियमेव च।
योगिनां ज्ञानिनां चैव सिद्धिरूपं तपस्विनाम् ॥ ३८ ॥

धनी, गुणी, शुद्ध, विद्वानों का प्रिय, योगियों, ज्ञानियों तथा तपस्वियों को सिद्धि देने वाला ॥ ३८ ॥

यशस्विनं च लोकेषु दातारं सर्वसम्पदाम्।
इत्येवमुक्त्वा सा देवी तस्मै तद्बालकं ददौ ॥ ३९ ॥

त्रिलोकी में यशस्वी और सब सम्पदा का दान करने वाला होगा। यह कहकर षष्ठी देवी ने उस बालक को राजा के हाथों में दे दिया ॥ ३९ ॥

राजा चकार स्वीकारं पूजार्थं च प्रियव्रतः।
जगाम देवी स्वर्गं च दत्त्वा तस्मै शुभं वरम् ॥ ४० ॥

राजा प्रियव्रत ने स्वयं पूजा करने तथा पूजा का प्रचार कराने के लिए आश्वासन दिया। तब देवी उन्हें शुभदायक वरदान देकर, स्वर्गलोक को चली गयीं ॥ ४० ॥

आजगाम सहामात्यः स्वगृहं हृष्टमानसः।
आगत्य कथयामास वृत्तान्तं पुत्रहेतुकम् ॥ ४१ ॥

राजा का अन्तःकरण प्रसन्न हो गया और वह अपने मन्त्री आदि के साथ अपने महल में लौट आये। पश्चात् उन्होंने पुत्र के बारे में पूरा वृतान्त सब से कह दिया ॥ ४१ ॥

श्रुत्वा बभूवुः सन्तुष्टा नरा नार्यश्च नारद !।
मङ्गलं कारयामास सर्वत्र पुत्रहेतुकम् ॥ ४२ ॥

हे नारदजी ! सभी लोग और रनिवास की सभी महिलाएं यह सुनकर बड़ी प्रसन्न हुईं। पुत्र के पुनर्जन्म प्राप्त करने के उपलक्ष्य में राजा ने सर्वत्र उत्सव कराया ॥ ४२ ॥

देवीं च पूजयामास ब्राह्मणेभ्यो धनं ददौ।
राजा च प्रतिमासेषु शुक्लषष्ठया महोत्सवम् ॥ ४३ ॥

राजा ने स्वयं षष्ठी देवी का पूजन कर ब्राह्मणों को दान दिया। तब से प्रत्येक महीने के शुक्ल पक्ष की षष्ठी तिथि के दिन राजा षष्ठी देवी का महोत्सव करते रहे ॥ ४३ ॥

षष्ठ्या देव्याश्च यत्नेन कारयामास सर्वतः।
बालानां सूतिकागारे षष्ठाहे यत्नपूर्वकम् ॥ ४४ ॥

और तभी से सर्वत्र (अपने साम्राज्य के अन्तर्गत सभी प्रान्तों में) षष्ठी देवी के पूजन का यत्नपूर्वक प्रचार करवाया। सूतिकागार (सौरी घर) में बालकों की छट्ठी के दिन यत्नपूर्वक ॥ ४४ ॥

तत्पूजां कारयामास चैकविंशतिवासरे।
बालानां शुभकार्ये च शुभान्नप्राशने तथा ॥ ४५ ॥

षष्ठी देवी की पूजा करवायी। बालक के उत्पन्न होने के इक्कीसवें दिन, बालकों के अन्य शुभ (संस्कार) कार्य के दिन और शुभ अन्नप्राशन संस्कार के दिन ॥ ४५ ॥

सर्वत्र वर्धयामास स्वयमेव चकार ह।
ध्यानं पूजाविधानं च स्तोत्रं मत्तो निशामय ॥ ४६ ॥

सर्वत्र उनकी पूजा करवाई और स्वयं उनकी पूजा की। अब आप षष्ठी देवी के ध्यान, पूजन-पद्धति और स्तोत्र के बारे में मुझसे सुनिए ॥ ४६ ॥

यच्छ्रुतं धर्मवक्त्रेण कौथुमोक्तं च सुव्रत !।

हे सुव्रत ! इन्हें मैं कौथुमी शाखा के अनुसार, जैसाकि धर्मदेव के मुख से सुन चुका हूँ, उसी भाँति कह रहा हूँ।

(पूजन-विधि)

शालग्रामे घटे वाऽथ वटमूलेऽथवा मुने ! ॥ ४७ ॥

'हे नारदजी ! शालग्राम शिला में अथवा कलश में अथवा बरगद के पेड़ की जड़ में ॥ ४७ ॥

भित्त्यां पुत्तलिकां कृत्वा पूजयेद्वा विचक्षणः।
षष्ठांशां प्रकृतेः शुद्धां प्रतिष्ठाप्य च सुप्रभाम् ॥ ४८ ॥

अथवा भीत में (दीवाल में लाल चन्दन से) तस्वीर बनाकर या मूर्ति बनाकर, प्रतिभाशाली व्यक्ति को चाहिए कि प्रकृति की षष्ठांशरूपिणी, शुद्ध और सुप्रभा देवी की प्रतिष्ठा करके पूजन करें ॥ ४८ ॥

(ध्यान)

सुपुत्रदां च शुभदां दयारूपां जगत्प्रसूम्।
श्वेतचम्पकवर्णाभां रत्नभूषणभूषिताम् ॥ ४९ ॥

हे देवसेना ! आप सुन्दर पुत्र देनेवाली हैं, शुभदायिनी हैं, आप करुणा की प्रतिमूर्ति हैं, आप जगज्जननी हैं, आप सफेद चम्पा के फूल की तरह गौर-वर्ण की है, आप रत्नों के आभूषणों से अलंकृत है ॥ ४९ ॥

पवित्ररुपां परमां देवसेनां परां भजे।
इति ध्यात्वा स्वशिरसि पुष्पं दत्वा विचक्षणा ॥ ५० ॥

आप पवित्ररूपिणी, आप परमा (सर्वोच्च) और आप ही परा (सबसे श्रेष्ठ) हैं, मैं आपका ध्यान करता हूँ। इस प्रकार ध्यान करने के बाद पूजन-कर्त्ता को चाहिए कि अपने शिर में फूल लगा ले ॥ ५० ॥

पुनर्ध्यात्वा च मूलेन पूजयेत् सुव्रतां सतीम्।
पाद्यार्घ्याचमनीयैश्च गन्ध-पुष्प-प्रदीपकैः ॥ ५१ ॥

फिर ध्यान करें और सुन्दर नियमवाली सती देवी की मूलमन्त्र ('ॐ ह्रीं षष्ठीदेव्यै स्वाहा') से पूजा करें। इसी मन्त्र से आवाहन, अर्घ्य, पाद्य, आचमन आसन, स्नान, वस्त्र-आभूषण, चन्दन, कुंकुम (रोली), सिन्दूर, अक्षत, पुष्प, धूप ॥ ५१ ॥

नैवेद्यैर्विविधैश्चापि फलेन शोभनेन च।
ॐ ह्रीं षष्ठीदेव्यै 'स्वाहेति विधिपूर्वकम् ॥ ५२ ॥

विविध प्रकार के नैवेद्य, आचमनीय, ताम्बूल पूगीफल, ऋतुफल, दक्षिणा चढ़ावें, नमस्कार और आरती करें। 'ॐ ह्रीं षष्ठीदेव्यै स्वाहा' यह मूल मन्त्र है और इसीसे सब सामग्री चढ़ेगी। कर्ता को चाहिए कि विधिपूर्वक ॥ ५२।

अष्टाक्षरं महामन्त्रं यथाशक्ति जपेन्नरः।
ततः स्तुत्वा च प्रणमेद्भक्तियुक्तः समाहितः ॥ ५३ ॥

इस अष्टाक्षर महामन्त्र को, अपनी शक्ति के अनुसार जप करें। जप करने के बाद भक्तिपूर्वक, दत्तचित्त हो उनके स्तोत्र का पाठ करें और नमस्कार करें ॥ ५३ ॥

स्तोत्रं च सामवेदोक्तं वरं पुत्रफलप्रदम् ।
अष्टाक्षरं महामन्त्रं लक्षधा यो जपेत् ततः ॥ ५४ ॥

षष्ठीदेवी का यह स्तोत्र सामवेदोक्त है, अत्यन्त श्रेष्ठ है और पुत्ररूपी फल को देने वाला है। जो व्यक्ति 'ह्रीं षष्ठीदेव्यै स्वाहा' इस अष्टाक्षर महामन्त्र का एक लाख बार जप करते हैं ॥ ५४ ॥

सुपुत्रं स लभेन्नूनमित्याह कमलोद्भवः ।
स्तोत्रं शृणु मुनिश्रेष्ठ ! सर्वकामशुभावहम् ॥ ५५ ॥

उन्हें निश्चय ही सुन्दर सन्तति होती है—ऐसा मेरा (ब्रह्माजी का) कथन है। हे ऋषिवर ! अब आप षष्ठीस्तोत्र सुनिए। यह स्तोत्र सब कामनाओं को पूरा करने वाला और कल्याणकारी है ॥ ५५ ॥

वाञ्छाप्रदं च सर्वेषां गूढ़ं वेदेषु नारद ! ।

हे नारद ! यह सबकी वाञ्छा पूर्ण करता है और वेदों में गूढ रूप से विद्यमान है।

(स्तोत्र-)

नमो देव्यै महादेव्यै सिद्धयै शान्त्यै नमो नमः ॥ ५६ ॥

(राजा प्रियव्रतकृत स्तोत्र—) हे देवी ! हे महादेवी ! हे सिद्धिदात्री ! हे शान्तिदायिनी ! आपको नमस्कार है ॥ ५६ ॥

शुभायै देवसेनायै षष्ठ्यै देव्यै नमो नमः ।
वरदायै पुत्रदायै धनदायै नमो नमः ॥ ५७ ॥

हे शुभ्ररूपिणी ! हे देवसेना ! हे षष्ठी देवी ! आपको प्रणाम है। हे वरदायिनी ! हे पुत्रदायिनी ! हे सम्पत्तिदायिनी ! आपको नमस्कार है।५७।

सुखदायै मोक्षदायै षष्ठीदेव्यै नमो नमः ।
षष्ठ्यै षष्ठांशरूपायै सिद्धायै च नमो नमः ॥ ५८ ॥

हे सुखदायिनी ! हे मोक्षदायिनी ! हे षष्ठीदेवी ! आपको प्रणाम है। हे षष्ठी ! हे प्रकृति की षष्ठांशरूपिणी ! हे सिद्धदेवी ! आपको नमस्कार है ॥ ५८ ॥

मायायै सिद्धयोगिन्यै षष्ठीदेव्यै नमो नमः ।
सारायै शारदायै च परादेव्यै नमो नमः ॥५९॥

हे माया ! हे सिद्धयोगिनी ! हे षष्ठी देवी ! आपको प्रणाम है ! हे साररूपिणी ! हे शारदा ! हे परा देवी ! आपको नमस्कार है ॥ ५९ ॥

बालाधिष्ठातृदेव्यै च षष्ठीदेव्यै नमो नमः।
कल्याणदायै कल्याण्यै फलदायै च कर्मणाम् ॥६०॥

हे बालकों की अधिष्ठात्री देवी ! हे षष्ठी देवी ! आपको प्रणाम है। हे कल्याण देने वाली ! हे कल्याणी ! हे कर्मों के फल को देनेवाली ! ॥६०॥

प्रत्यक्षायै स्वभक्तानां षष्ठीदेव्यै नमो नमः।
पूज्यायै स्कन्दकान्तायै सर्वेषां सर्वकर्मसु ॥६१॥

हे अपने भक्तों को प्रत्यक्ष दर्शन देनेवाली ! हे षष्ठी देवी ! आपको नमस्कार है। हे स्कन्दकुमार की भामिनी ! हे सबके सब कर्मों में पूज्य-रूपिणी ! ॥ ६१ ॥

देवरक्षणकारिण्यै षष्ठीदेव्यै नमो नमः।
शुद्धसत्त्वस्वरूपायै वन्दितायै नृणां सदा ॥६२॥

हे देवताओं की रक्षा करनेवाली ! हे षष्ठी देवी ! आपको प्रणाम है। हे शुद्ध-सत्त्वगुणरूपिणी ! हे सदा जनवन्दिता ! ॥ ६२ ॥

हिंसाक्रोधवर्जितायै षष्ठीदेव्यै नमो नमः।
धनं देहि प्रियां देहि पुत्रं देहि सुरेश्वरि ॥६३॥

हे हिंसा तथा क्रोध से दूर रहनेवाली ! हे षष्ठी देवी ! आपको नमस्कार है। हे देवेश्वरी ! आप मुझे सम्पत्ति दीजिए, प्रियतमा पत्नी दीजिए और सुन्दर पुत्र दीजिये ॥ ६३ ॥

मानं देहि जयं देहि द्विषो जहि महेश्वरि !।
धर्मं देहि यशो देहि षष्ठीदेव्यै नमो नमः ॥६४॥

हे माहेश्वरी ! आप मुझे सम्मान दीजिए, विजय दीजिए, शत्रुओं का नाश कीजिए, मुझे धर्म दीजिये और मुझे कीर्ति प्रदान कीजिए। हे षष्ठी देवी ! आपको प्रणाम है ॥ ६४ ॥

देहि भूमिं प्रजां देहि विद्यां देहि सुपूजिते !।
कल्याणं च जयं देहि षष्ठीदेव्यै नमो नमः ॥६५॥

हे सुपूजिता ! आप मुझे भूमि प्रदान कीजिए, सन्तान दीजिये, विद्या दीजिए, मेरा कल्याण और जय दीजिए, हे षष्ठी देवी ! आपको बार-बार नमस्कार है ॥ ६५ ॥

इति देवीं च संस्तूय लभते पुत्रं प्रियव्रतः ।
यशस्विनं च राजेन्द्रः षष्ठीदेव्याः प्रसादतः ॥६६॥

इस प्रकार स्तुति करने पर ही राजेन्द्र प्रियव्रत को षष्ठी देवीके अनुग्रह से यशस्वी पुत्र की प्राप्ति हुई थी ॥ ६६ ॥

षष्ठीस्तोत्रमिदं ब्रह्मन् ! यः शृणोति तु वत्सरम् ।
अपुत्रो लभते पुत्रं वरं सुचिरजीविनम् ॥६७॥

हे ब्रह्मन् ! जो निःसन्तान व्यक्ति इस षष्ठी देवी के स्तोत्र को निरन्तर एक वर्ष तक सुनते (पाठ करते) हैं, उन्हें श्रेष्ठ और दीर्घजीवी पुत्र होता है ॥ ६७ ॥

वर्षमेकं च यो भक्त्या सम्पूज्येदं शृणोति च ।
सर्वपापाद्विनिर्मुक्तो महावन्ध्या प्रसूयते ॥६८॥

जो महावन्ध्या (बाँझ नारी) एक वर्ष तक देवसेना की भक्ति के साथ पूजा करके इस स्तोत्र को सुनती है, वह सब पापों से छूट जाती है और महावन्ध्या होने पर भी ॥ ६८ ॥

वीरं पुत्रं च गुणिनं विद्यावन्तं यशस्विनम् ।
सुचिरायुष्यवन्तं च सूते देवीप्रसादतः ॥६९॥

षष्ठी देवी के प्रसाद से वीर, गुणी, विद्वान्, यशस्वी, दीर्घायुसम्पन्न पुत्र उत्पन्न करती है ॥ ६९ ॥

काकावन्ध्या च या नारी मृतवत्सा च या भवेत् ।
वर्षं श्रुत्वा लभेत् पुत्रं षष्ठीदेवीप्रसादतः ॥७०॥

जो नारी काकवन्ध्या हो (अर्थात् जिसे केवल एक पुत्र उत्पन्न हुआ हो) और जिस स्त्री को पुत्र उत्पन्न हो-होकर मर-मर जाते हों, वह यदि इस स्तोत्र को एक वर्ष तक लगातार सुनती रहे तो षष्ठी देवी के अनुग्रह से वह पुत्र का मुँह देखती है ॥ ७० ॥

रोगयुक्ते च बाले च पिता माता शृणोति चेत् ।
मासेन मुच्यते बालः षष्ठीदेवीप्रसादतः ॥७१॥

बालक के रोगी होने पर, यदि उसके माता-पिता इस स्तोत्र को सुनें तो षष्ठी देवी की कृपा से एक महीने के भीतर ही बालक रोगमुक्त हो जाता है ॥

इति भाषाटीकासहिता षष्ठीदेवी कथा समाप्ता ।

श्रीषष्ठीदेव्यै नमो नमः

परिशिष्ट–भाग

पुत्र-प्राप्ति के लिये अनेक दवाएँ

१—गुप्ता (केवाँच), उड़द, तिल और चावल—इन सबका चूर्ण बनाकर मिश्री मिला दे। पश्चात् ऋतुस्नान के बाद प्रातःकाल और सायंकाल दुग्ध के साथ चूर्ण खाने से स्त्री को पुत्र होता है।

२—पीपल, बाँस और कुश की जड़, एवं 'वैष्णवी' (अपराजित) और 'श्री' (गम्भीर) नामक औषधियों की जड़ तथा दूर्वा और असगन्ध का मूल—इन सब को कूट-पीस कर चूर्ण बनाकर ऋतु-स्नान के बाद प्रातः-काल और सायंकाल दुग्ध के साथ खाने से स्त्री को पुत्र होता है।

३—कौन्ती (सम्भाल का बीज), लक्ष्मी (शरिवन), शिवा (हरड़); और आँवले का बीज, लोध्र (पठानी लोध) और वट के अंकुर को कूट-पीस कर चूर्ण तैयार कर उसको ऋतुकाल के बाद घी और दुग्ध के साथ पीने से स्त्री का पुत्र होता है।

४—'श्री' नामक औषधि की जड़ और वट के अंकुर को कूट-पीसकर चूर्ण बनाकर उसको दुग्ध के साथ पीने से स्त्री को पुत्र होता है। श्री, बटांकुर और देवी—इनके रस का नस्य लेना और पीना भी चाहिये।

५—'श्री' और 'कमल' की जड़ के पीपल (अश्वत्थ) के उत्तर ओर के भाग के मूलको कूट-पीसकर चूर्ण बनाकर उसको दुग्ध के साथ पीने से स्त्री को पुत्र होता है।

६—कपास के फल और पल्लव (पत्र) को दुग्ध में पीसकर तरल कर के पीने से स्त्री को पुत्र होता है।

७—अपामार्ग (चिचिड़ा) के नूतन पुष्प के अग्रभाग को भैंस के दुग्ध के साथ पीने से स्त्री को पुत्र की प्राप्ति होती है।

८—पूर्वं पुत्रवती या सा क्वचिद् वन्ध्या भवेद्यदि।
काकवन्ध्या तु सा ज्ञेया चिकित्सा तत्र कथ्यते॥
विष्णुक्रान्तां समूलां तु पिष्ट्वा महिषिदुग्धकें।
महिषीनवनीतेन ऋतुकाले तु भोजयेत्॥
एवं सप्तदिनं कुर्यात् पुनर्गर्भश्च लभ्यते।

(दत्तात्रेयतन्त्रे)

९—एकविंशत्यहं यावत् दुग्धेन सह मेथिकाम् ।
मेथीतोलकमेकं च खण्डकं तोलकद्वयम् ॥
घृतं तोलकमेकं च पिबेत् दुग्धेन मिश्रितम् ।
मृतवत्सा मृतगर्भा काकवन्ध्या तथैव च ॥
पुत्रहीना च वन्ध्या च पञ्च चैव प्रकीर्तिताः ।
संहरेत् सर्वदोषाश्च मेथीभक्षणमुत्तमम् * ॥

१०—समूलपत्रां *सर्पाक्षी रविवारे समुद्धरेत् ।
एकवर्णगवां क्षीरैः कन्याहस्तेन पेषयेत् ॥
ऋतुकाले पिबेद् वन्ध्या पलार्द्धं तद्दिने दिने ।
क्षीरशाल्यन्नमुद्गांश्च लघ्वाहारं प्रदापयेत् ॥
एवं सप्तदिनं कुर्याद् वन्याऽपि लभते सुतम् ।

११—श्वेतायाः कण्टकार्याश्च मूलं तद्वच्च गर्भकृत् ॥
न कर्म कारयेत् किञ्चिद् वर्जयेच्छीतमातपम् ।
() शिफावर्हिशिखायास्तु क्षीरेण परितोषितम् ।
पिबेद् ऋतुमती नारी गर्भधारणहेतवे ।
अश्वगन्धाकषायेण सिद्धं दुग्धं घृतान्वितम् ।
ऋतुस्नाताङ्गना प्रातः पीत्वा गर्भं दधाति हि ॥

---
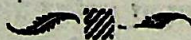
* नाडीशुद्धायां स्त्रियामुपरि ऋतुकालमिदमौषधं देयम् ।

* लक्ष्मणाम् । () मोरशिखा ।

पं० वायुनन्दन मिश्र कृत

वाशिष्ठी हवन भाषा टीका	१५/-
मूलशान्ति पद्धति भाषा टीका	१५/-
वास्तुशान्ति प्रयोग	१५/-
ग्रहप्रयोग अर्थात ग्रहशान्ति	५०/-
प्रतिष्ठा महोदधि	१२५/-
त्रिपीन्डी श्राद्ध पद्धति	२०/-
गया श्राद्धपद्धति भाषा टीका	१५/-
रुद्र स्वाहाकार विधि	३/-
रुद्र प्रयोग रुद्रयाग प्रयोग	५०/-
कुंभ विवाह अर्की विवाह पद्धति भाषा टीका	१०/-
विष्णुयाग पद्धति	५०/-
विवाह पद्धति	१५/-
उपनयन पद्धति	१५/-
सत्यनारायण व्रत कथा	८/-
गोदान पद्धति भाषा टीका	८/-
मैथिल काव्य संग्रह—मैथिल भाषा (सीतारात झा)	१०/-

हमारे यहाँ पिछले संवतों का पंचांग उपलब्ध हो सकता है ।

पुस्तक प्राप्ति स्थान

मास्टर खेलाड़ी लाल एण्ड संस

प्रोपराइटर—गोपाल जी

कचौड़ीगली, वाराणसी